IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

प्रकृति:अन्योन्याश्रित एवं अबबोध

डॉ अमिता जैन

सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग,

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, नागौर

amitajainjuly1@gmail.com

सारांश -तीनों गुण सदा सम्मिलित रहते हैं एवं एक दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते| ये सदा संयुक्त है| ये एक दूसरे का तिरस्कार भी करते हैं, उपकार भी करते हैं और परस्पर सहयोग करके सारे पदार्थों को उत्पन्न करते हैं| जिस प्रकार दीपक में तेल, बत्ती और ज्वाला परस्पर विरोधी होते हुए भी मिलकर प्रकाश करते हैं| उसी प्रकार ये तीनों गुण परस्पर विरोधी होते हुए भी मिलकर प्रयोजन की सिद्धि के लिए कार्य करते हैं| **जैसे- सत्व गुण** की प्रतीक पतिव्रता सुंदरी अपने पति को सुखी, सपत्नी को दुखी एवं अन्य कामी पुरुष को मोहित करती है| **रजोगुण** का प्रतीक वीर योद्धा युद्ध में अपनी वीरता से अपने लोगों को सुखी, शत्रुओं को दुखी तथा अन्य को मोहित करता है| **तमोगुण** का प्रतीक मेघ आकाश को आच्छादित करके संतप्त लोगों को सुखी, कृषकों को क्रियाशील तथा विरही को विषण्ण करता है|

मूल शब्द- सत्व गुण, रजोगुण, तमोगुण, आहार

- **प्रस्तावना** -जब तक कर्म नष्ट नहीं हो जाते, तब तक प्राणी एक जन्म के बाद दूसरे जन्म को प्राप्त होता रहता है। अब प्रश्न उठता है कि जब पुनर्जन्म होता है तो कौन आदमी किस योनि में पैदा होगा? इस प्रश्न का उत्तर भगवद्गीता में दिया गया है। गीता के चौदहवें अध्याय में तीन गुणों के आधार पर इसका समाधान देते हुए कहा गया है-

"ऊर्ध्व गच्छन्ति सत्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसा: ।

जघन्यगुणावृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसा: ।।

अर्थात् सत्व गुण में स्थित पुरुष स्वर्ग आदि उच्च लोकों को प्राप्त होते हैं, रजोगुण में स्थित पुरुष मध्य में अर्थातृ मनुष्य लोक में ही रहते हैं और तमोगुण के कार्य रूप निद्रा, आलस्य, प्रमाद आदि में स्थित तामस पुरुष अधोगति को प्राप्त होते हैं।

सत्व गुण जिस व्यक्ति में होता है वह ज्ञान की आराधना करता है। उसके जीवन का क्रम अच्छा होता है। रजोगुण वाला अर्थात जिसमें राग, लोभ, आसक्ति है, न ज्यादा पाप करता है, न ज्यादा धर्म करता है, वह व्यक्ति मरकर वापस मनुष्य गति में पैदा होता है। जिस व्यक्ति में तमोगुण की प्रधानता होती है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

यानि प्रमाद, मोह, अज्ञान से जिसकी चेतना आवृत्त होती है, ऐसा तामसिक गुण वाला व्यक्ति मरकर अधोगति में जाता है।कर्तव्य अकर्तव्य को नहीं जानने वाले मनुष्य पशु के समान होते हैं, क्योंकि करणीय और अकरणीय का विवेक ही मनुष्य और पशु के बीच की भेद- रेखा होती है। अनेक व्यक्ति बिना सोचे विचारे काम कर लेते हैं। अनेक व्यक्ति इतनी मंदबुद्धि वाले होते हैं कि वे समझ ही नहीं पाते कि उनके लिए क्या करना अच्छा है और क्या नहीं करना अच्छा है। ऐसी स्थिति में आदमी की विवेक चेतना को जगा देना उस पर एक बड़ा उपकार होता है। "सास बाहर जा रही थी। उसने बहु रानी से कहा- मैं किसी आवश्यक कार्य के लिए बाहर जा रही हूं। रात को देर से आऊंगी। तुम एक बात का विशेष ध्यान रखना कि घर में अंधेरा न रहे। बहुरानी में समझ शक्ति कुछ कम थी। उसने सोचा कि आज पहली बार सास में मुझे कोई काम सौंपा है, इसलिए अच्छे ढंग से करूंगी। जैसे ही सास बाहर गई, बहुरानी ने घर के सारे दरवाजे, खिड़कियां बंद कर लिए, किंतु ज्यों ही संध्या हुई, रात होने लगी, अंधेरा छा गया। बहू को गुस्सा आया और लाठी से दरवाजे, खिड़कियों को पीटने लगी। अंधेरा भीतर आ गया। आया तो आया कैसे? आज ही तो सास ने अपनी अनुपस्थिति में मुझे कोई काम सौंपा था और उसमें ही मैं विफल हो गई। अंधेरे को पीटते पीटते उसके हाथ लहूलुहान हो गए। रात को सास आई, पूछा- बहुरानी घर में अंधेरा कैसे हैं? बहू ने कहा मैंने तो आपके जाते ही सब दरवाजे बंद कर दिए थे, किंतु पता नहीं यह किस रास्ते से आ गया? सास ने सोचा की बहू विनीत तो है, आज्ञाकारी तो है, किंतु विवेक संपन्न नहीं है। सास ने दीपक जलाया और अंधेरा गायब हो गया। अंधेरे को भगाने के लिए दरवाजे को पीटने की जरूरत नहीं, एक दीपक जलाने की अपेक्षा है। बहू में विवेक नहीं था, इसलिए उसने अकरणीय कर दिया"।

आहार हमारा कैसा हो? इस बात को भी हमें जानना चाहिए। आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले रसयुक्त सात्विक आहार का सेवन करना चाहिए। कड़वे, खट्टे, नमकीन, बहुत गर्म, तीखे, जलन उत्पन्न करने वाले, दुख, शोक और रोग उत्पन्न करने वाले आहार राजसिक लोगों को पसंद होते हैं। जो भोजन अधपका, रसरहित, दुर्गंधयुक्त, वासी तथा अपवित्र है, वह भोजन तामसिक लोगों को प्रिय होता है।प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव प्रकृति के अधीन है जो तीन प्रकार का होता है–सत्व-रजस्-तमस् प्रधान। तीनों ही गुण मूल में मन-प्राण-वाक् रूप अविनाभूत ही हैं। केवल अल्पता-प्रधानता का भेद रहता है।त्रिगुण का प्रभाव चूंकि प्रत्येक जीव के कर्म में दिखाई पड़ता है, अतः कहा जाता है कि प्रकृति ही जीवन को चलाती है। वास्तव में तो सृष्टि ब्रह्म और माया ही रचते हैं। प्रकृति अपने रंगों से सृष्टि को रंगीन बना देती है।प्रकृति का प्रभाव मन पर पडऩे से सभी विषयों के बारे में निर्णय बदल जाता है। आसक्ति, सुख-दु:ख के प्रभाव त्रिगुणात्मक ही हैं। जहा कुछ नहीं है, वहां ये गुण कुछ न कुछ दिखाते रहते हैं। जैसे दीपक के आगे जिस रंग का कांच/कागज रख देंगे, तो प्रकाश भी उसी रंग का होकर दिखाई पड़ेगा। तीनों गुण भी अलग-अलग रंग के कांच हैं, जो आत्मा को घेरे रहते हैं तथा मिथ्या दृष्टि पैदा करते हैं।कृष्ण कह रहे हैं कि -

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

पुरुष:प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु।। (गीता 13.21)

अर्थात् प्रकृति में स्थित पुरुष ही प्रकृति से उत्पन्न त्रिगुणात्मक पदार्थों को भोगता है। इन गुणों का संग ही जीवात्मा के अच्छी-बुरी योनियों में जन्म लेने का कारण है।

पं. मधुसूदन ओझा ने अपने ग्रन्थों में इन तीन गुणों को क्रियारूप माना है। सत्त्वगुण में क्रिया अत्यल्प रहने के कारण आत्मा का स्वरूप बहुत कुछ भासित हो जाता है। इसीलिए उसको ज्ञानजनक और सुखजनक कहा। रजोगुण में क्रिया अधिक बढ़ जाने के कारण आत्मा का स्वरूप तिरोहित हो जाता है और तमोगुण में तो आत्मा के स्वरूप का पता ही नहीं लगता। संसार की आसक्ति अत्यन्त बढ़ जाती है।ये तीनों गुण प्रकृति के स्वभाव रूप होते हुए सदा एक दूसरे के आश्रित रहते हैं। प्रश्न उठता है कि जब तीनों का स्वरूप पृथक-पृथक है और तीनों के कार्य भी पृथक-पृथक हैं तब उनको परस्पर सम्बद्ध और अन्योन्याश्रित मानने की क्या आवश्यकता? अविगीता में कहा गया है कि जैसे प्रकाश और दाहकत्व दोनों अग्नि के गुण हैं।ये दोनों कार्य पृथक-पृथक हैं, फिर भी अग्नि के ही आश्रित होकर साथ-साथ रहते हैं। एक दूसरे के आश्रित होते हैं। बिना उष्णता के अग्नि का प्रकाश नहीं फैल सकता और बिना प्रकाश के उष्णता की उपलब्धि नहीं हो सकती। इसी प्रकार प्रकृति के तीनों गुण भी अन्योन्याश्रित होकर ही कार्य करते हैं।

मनुष्य में सर्वदा तीनों ही गुण विद्यमान रहते हैं, परन्तु उसकी विभिन्न अवस्थाओं में कभी एक गुण बढ़कर दूसरे गुणों को दबा देता है और कभी दूसरा गुण प्रथम और अंतिम को दबाकर स्वत: प्रधान बन बैठता है तथा कभी अन्तिम गुण पहले के दोनों गुणों को दबाकर अपना प्रभुत्व जमा लेता है। रज और तम ही इन्द्रियों के ज्ञान में बाधा डालने वाले हैं। जब सत्त्व गुण के प्रभाव से रज और तम दब जाते हैं तब इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों का अनायास ज्ञान होता रहता है। उनमें शुद्धता और निर्मलता का अनुभव होता रहता है।जीवन में निरन्तर सात्विक भावना बनाए रखने का अभ्यास हो तभी अन्तिम समय में भी सात्विक भावना बनी रह सकती है। अन्त समय में मन के भाव के अनुरूप ही अगले जन्म में योनि प्राप्त होती है।हिंदू शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के अंदर कुछ गुण होते हैं|ये व्यक्ति की प्रकृति निर्धारित करते हैं, जैसे कि **सतोगुण** वाला व्यक्ति धार्मिक प्रकृति का होता है, सज्जन, दयालु होता है|**रजोगुण** वाला व्यक्ति आर्थिक क्रियाकलाप करने वाला, समाज की रक्षा करने वाला होता है|**तमोगुण** वाला व्यक्ति नीच कर्म में लिप्त होता है, गंदे कार्य करता है, जीवनशैली निम्न कोटि की होती है| संपूर्ण सृष्टि सत, रज और तम तीनों गुणों से बनी हुई है| इसमें रज गुण चंचल होता है जिसके कारण हमारा शरीर, इंद्रियां व मन में चंचलता बनी रहती है|रजो गुण की चंचलता के कारण ध्यान लगना कठिन है| साधना के द्वारा तीनों गुणों से ऊपर उठा जाता है, क्योंकि गुणों से ऊपर उठने के लिए आत्मभाव में आना जरूरी है|साधक जिस समय आत्मभाव में आता है, उस समय गुणों का प्रभाव नहीं रहता| क्योंकि तीनों गुण प्रकृति में है आत्मा में नहीं| फिर जैसे ही साधक आत्मभाव में आता है वैसे ही उसका रजोगुण शांत हो जाता है|

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

कपिल मुनि ने स्वभाव के आधार पर तीनगुणों को स्पष्ट किया है-

सत्व गुण शारीरिक सौंदर्य की दृष्टि से चाहे जिस रूप के हों, आचरण एवं व्यवहार की दृष्टि से उत्तम होते हैं| ये सौम्य एवं शांत होते हैं और परहित पर अधिक ध्यान देने वाले होते हैं| ऐसे लोगों को देव स्वरूप समझा जाता है|

रजस गुण ऐसे लोगों में चंचलता, उत्तेजना, उद्यमशीलता अधिक होती है| गृहस्थ जीवन से संबंधित लोग प्रायः रजोगुणी होते हैं|

तमस गुण इनका स्वभाव सतोगुण के ठीक विपरीत होता है| इनमें क्रियाशीलता का अभाव होता है, ये आलसी एवं सुप्त होते हैं, क्रोधी एवं झगड़ालू प्रवृत्ति के होते हैं| ऐसे व्यक्ति अधिक स्वार्थी एवं दूसरों को कष्ट पहुँचाने वाले होते हैं|

श्रीमद्भागवद्गीता के अनुसार-

सतोगुण जब उभरता है, प्रबल बनता है तब आदमी को सुख में आसक्त बनाता है, सुख पाने के लिए प्रवृत्त करता है|

रजोगुण आदमी को कर्म में प्रवृत्त करता है, कर्म में आसक्त बनाता है| रागात्मकता को पुष्ट करने वाला रजोगुण होता है|

तमोगुण अज्ञान को पुष्ट करने वाला होता है, आदमी को प्रमाद में संलग्न कर देता है|

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति त्रिगुणात्मक है-

सत्वगुण शुद्धता या स्वच्छता का प्रतीक है| सुख उत्पन्न करता है| सरलता, प्रीति, श्रद्धा, संतोष, विवेक, दया आदि सुखदभाव उत्पन्न होते हैं| यह **शुक्लवर्ण** है|

रजोगुण अशुद्धि का प्रतीक है| यह सक्रिय होता है| समस्त क्रियाएं या प्रवृत्ति इसी के कारण होती है| यह दुख उत्पन्न करता है| मद, द्वेष क्रोध आदि दुखद भाव आ जाते हैं| यह **रक्तवर्ण**है|

तमोगुण अंधकार या अज्ञान का प्रतीक है| यह अवरोधक है| इसका कार्य प्रकाश तथा क्रिया का, सुख और दुःख का अवरोध करना है| यह अधोगामी है| इससे मोह उत्पन्न होता है| मोह के अंतर्गत प्रमाद, आलस्य, निद्रा, मूर्च्छा, अज्ञान, विषाद आदि आ जाते हैं| यह **कृष्णवर्ण** है|

- **निष्कर्ष** -सारा संसार पांच तत्वों से बना है और इन पांच तत्वों के तीन गुण हैं- सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण|यही तीन गुण हमारी चेतना की तीन अवस्थाओं- जागृत अवस्था,सुप्तावस्था, स्वप्नावस्था से भी संबंधित है| जब **सतोगुण** की प्रधानता होती है तो हम प्रफुल्लित, हल्के-फुलके, अधिक सजग व बोधपूर्ण होते हैं|**रजोगुण** की प्रधानता में उत्तेजना, विचार, इच्छाएं और वासनाएं बहुत बढ़ जाती है| हम या तो बहुत खुश या बहुत उदास हो जाते हैं| **तमोगुण** की प्रधानता होती है तो हम सुस्त, आलस्य

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

और भ्रम के शिकार हो जाते हैं| हमारे कृत्यों में भी इन्हीं तीन गुणों की झलक देखने को मिलती है| जब सत्य की हमारे जीवन में प्रधानता होती है, तो रजोगुण और तमोगुण गौण हो जाते हैं, उनका प्रभाव कम हो जाता है|रजोगुण की प्रधानता में सत्व और तमस गौण हो जाते हैं और तमोगुण के प्रधान होने पर सत्व और रजस पीछे रह जाते हैं|इन्हीं तीन गुणों के बल पर यह संसार और जीवन चलता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ-

[1]. शर्मा, चंद्रधर **(1995).** भारतीय दर्शन:आलोचन और अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स दिल्ली

[2]. चतुर्वेदी, वृजमोहन **(1998).**सांख्यकारिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली

[3]. आचार्य, महाश्रमण**(2013).**विजयी बनो, जैन विश्व भारती प्रकाशन लाडनूं

[4]. आचार्य, महाश्रमण **(2013).**संपन्न बनो, जैन विश्व भारती प्रकाशन लाडनूं

[5]. आचार्य, महाश्रमण**(2014).**आओ हम जीना सीखें, जैन विश्व भारती प्रकाशन लाडनूं

[6]. आचार्य, महाश्रमण**(2016).**निर्वाण का मार्ग, जैन विश्व भारती प्रकाशन लाडनूं

[7].राजस्थान पत्रिका **17** दिसंबर **2022**